बच्चों के व्यक्तित्व के विकास में मनोवैज्ञानिक बाधाएँ

डॉ. सुभाष कुमार सुमन
सहायक प्राध्यापक, मनोविज्ञान विभाग मारवाड़ी महाविद्यालय, ल ना मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार।

ABSTRACT

शाब्दिक अर्थ में व्यक्तित्व अंग्रेजी के शब्द पर्सनैलिटी का हिन्दी में रूपान्तर है। 'पर्सनैलिटी' की उत्पत्ति लैटिन भाषा के शब्द 'परसोना' से हुई है। इस शब्द का अर्थ उस पहनावा से है जिसको नाटक के कलाकार आदि नाटक के समय पहनकर मंच पर आते है। इस वेश–भूषा में व्यक्ति का व्यक्तित्व नहीं रहता है। व्यक्ति के व्यक्तित्व का मापन उसके बाहरी गुणों के आधार पर होता हैं। मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से व्यक्तित्व प्रत्येक बच्चे में मनोशारीरिक गुणों का एक ऐसा गत्यात्मक संगठन पाया जाता है कि उसका व्यवहार वातावरण में अपने –अपने ढ़ंग का अपूर्व होता है। वातावरण समान होने पर भी प्रत्येक व्यक्ति का व्यवहार, विचार, संवेग आदि अपूर्व होता है, जिसमें बच्चे के शारीरिक, मानसिक, नैतिक और सामाजिक गुणों के सुसंगठित और गत्यात्मक संगठन के लिए किया जाता है जिसे वह अन्य व्यक्तियों के साथ अपने सामाजिक जीवन में आदान–प्रदान व्यक्त करता है। व्यक्तित्व बच्चो के चरित्र, चित्त–प्रकृति, ज्ञान शक्ति तथा शरीर गठन का करीब–करीब एक स्थायी एवं टिकाउ संगठन है, जो वातावरण में उसके अपूर्ण समायोजन का निर्धारण करता है।

KEYWORDS: बच्चे के व्यक्तित्व ढ़ॉचे, व्यवहार की विधियाँ, रूचियाँ, अभिवृतियाँ, क्षमताओं, योग्यताओं, कुशलताओं, आत्मचेतना, इच्छा शक्ति, निर्देशित लक्षय, शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य

व्याख्याः

बच्चों के लिए व्यक्तित्व शब्द का प्रयोग उसके शारीरिक, मानसिक, नैतिक और सामाजिक गुणों के सुसंगाठित और गत्यात्मक संगठन के लिए किया जाता है, जिसे वह अन्य बच्चों के साथ अपने सामाजिक जीवन में आदान–प्रदान व्यक्त करता है। बच्चों के व्यक्तित्व–निर्धारण सम्बन्धी सभी परिभाषाएँ एक–दुसरे की विरोधी नहीं प्रत्युत् पूरक हैं वे बच्चे की अपने ढंग से व्यक्तित्व के निर्धारण में विचार प्रकट करती हैं। बच्चे का व्यक्तित्व वस्तुतः सभी गुणों का संतुलित संगठन है, जिसमें शारीरिक, मानसिक, सांवेगिक, संज्ञानात्क, बुद्धि, कल्पना चिन्तन, आदत, चरित्र, सामाजिक विकास आदि आ जाते हैं। इसके अतिरिक्त, व्यक्तित्व के अन्तर्गत व्यवहार की विधियाँ, रूचियाँ, अभिव्यक्ति, सामंजस्य, क्षमताएँ, योग्यताएँ और कुशलताएँ आ जाती है। बच्चे का व्यक्तित्व सभी का संगठित रूप है। ये सभी पहलू महत्वपूर्ण है। बच्चों का व्यक्तित्व इन सबका और इससे भी अधिक का योग है।[1]

बच्चे के व्यक्तित्व और मनोवैज्ञानिकों का गुण से तात्पर्य व्यवहार करने के ढ़ंग से है। वुडवर्थ ने इसकी परिभाषा इस प्रकार दी है कि बच्चे के व्यक्तित्व के गुण हमारे व्यवहार का एक मुख्य प्रकार का ढ़ंग है; जैसे–प्रसन्नता या आत्मविश्वास आदि, जो कुछ समय तक तो हमारे व्यवहार के ही गुण होते है, किन्तु कुछ दिनों बाद हमारे जीवन के एक आवश्यक अंग बन जाते हैं। वुडवर्थ ने बच्चों के व्यक्तित्व को इन्ही गुणों का योग बताया है। किन्तु केवल योग ही व्यक्तित्व नहीं है, वरन् बच्चों के व्यक्तित्व में कुछ और भी गुण सम्मिलित है। इस प्रकार बच्चे जो प्रसन्न और आत्मविश्वासी है या दुःखी है, इसका तात्पर्य केवल यही नहीं है कि वह इस प्रसन्नता आत्मविश्वास या दुःख का वही योग है। वरन् वास्तव में वह इससे भी कुछ अधिक है। गॉर्डन ऑलपोर्ट ने व्यक्तित्व के संगठन पर दैनिक शारीरिक दृष्टि से विचार किया है। उनके अनुसार "गुण हमारे परिवर्तित हो जाने वाले सक्रिय संस्कार है।" संस्कार कम–से–कम अंशत हमारी विशिष्ट आदतों से उत्पन्न होते हैं और हमारे वातावरण के ढ़ंग को प्रभावित करते हैं। बच्चे का व्यवहार उसकी आन्तरिक भावनाओं और बाह्म वातारण के प्रभाव के द्वारा संचालित होता है।[2]

शिक्षक को इन बाधाओं को पहचाने तथा दूर करने की कोशिश करनी चाहिए। मुख्य बाधाएँ निम्नलिखित है।

- **चुप रहने वाले बच्चेः**

मनोविज्ञानिक बाधाओं के अन्तर्गत कुछ बच्चे ऐसे होते है जो कक्षा में चुप्पी साधे रहते हैं इस चुप्पी के पीछे मनोविज्ञानिक कारण होते हैं। ये बच्चे अपनी कक्षा में पिछड़े समझे जा सकते हैं। उनमें आत्मविश्वास की कमी हो सकती है या कक्षा–कार्य में अरूचि हो सकती है। कारण जो भी हो बच्चों की अपने को चुप या पीछे हटाये रखना उनके सवस्थ विकास में बाधा उपस्थित करता है। यदि वे कक्षा –कार्य में सक्रिय रूप से भाग नहीं लेगें तो उनका मानिसिक, सांवेगिक तथा सामाजिक विकास अवरूद्ध रहेगा जाता इतनी ही नहीं बच्चों में कभी –कभी दिवा–स्वप्न देखना भी कल्पना करने की प्रवृत्ति को प्रतिफलित करती है लेकिन बहुधा यह हानिकारक मनोवैज्ञानिक दशा को प्रकट करती है। यह वास्तविक स्थिति तथा व्यवहारिक समास्याओं से पिंड छुड़ाने का एक मनोविज्ञानिक लक्षण हो सकता है। ऐसी दशा में दिवा–स्पप्न बच्चा तभी देखता है, जब वह अपने द्वारा निर्दिष्ट लक्ष्य की प्राप्ति में असफल हो जाता है तो वह काल्पनिक लोक में आनन्द पाना चाहता

हैं। पृष्ठोंन्मुखता भी वास्तविकता से मुँह मोड़ने का एक मनोवैाानिक तरीका है, जिसमें व्यक्ति अपने को कम आयु होने का अनुमान करता है। किसी आयु–स्तर के उत्तरदायित्व से पिंड छुड़ाने के लिए कुछ बालक बालिकाएँ पृष्ठोन्मुखी हो जाया व्यक्त करते है। लेकिन इन बालक –बालिकाओं को यह पता नहीं रहता है कि वे वास्तविकता से पीछे हटने का प्रयास कर रहे है। पृष्ठोन्मुखता व्यक्ति के विकास की एक बड़ी बाधा है। अक्सर इसका दायित्व स्कूल में शिक्षा–क्रम पर रहता है। जो कुछ बच्चों के लिए बौझिल तथा कठिन हो जाता है, उसे संभालने में अपने को असमर्थ पाकर बच्चे पीछे की ओर मुड़ते है। पृष्ठोन्मुखता के अन्य कारण भी हो सकते है। जिनका पता लगाना शिक्षक का कर्त्तव्य है।[3]

बच्चों में सुरक्षा की भावना का विद्यमान होना उनके स्वस्थ विकास की एक शर्त है। सुरक्षा की दृष्टि से खतरा उत्पन्न होने वाली परिस्थितियाँ निम्नांकित है–जिन बच्चों को कम अंक मिलता है, उनमें शिक्षक के प्रति संदेह उत्पन्न हो जाता है। इससे बच्चों की सुरक्षा भावना को आघात पहुँचता है। जिस तरह बच्चों को घर में पर्याप्त प्यार–दुलार नहीं मिलता है, जिससे उनके बच्चे के व्यक्तित्व विकास में बाधा पहुँचती है। उसी तरह विद्यालय में बालकों के द्वारा जब स्नेह नहीं मिलता है, तो उनमें असुरक्षा की भावना पनपती है। इससे बच्चों में दूसरों के प्रति कोमल भावनाएँ कुंठित हो जाती है। शिक्षक की परेशानी भी सुरक्षा भावना को क्षति पहुँचाती है। परेशानी संक्रामक होती है। माता–पिता की परेशानी के व्यक्तिगत कारण हो सकते है। बहुधा वे अपने छात्रों को देखकर अनावश्यक रूप से परेशान हो सकते है। कक्षा व्यवस्था तथा कथित अनुशासनहीनता आदि कारक शिक्षक को अधिक चिंचित बना देते है। उनकी यह स्थिति छात्रों की सुरक्षा–भावना के लिए हानिकारक सिद्ध होती है।[4] कुछ बच्चों में नकारात्मक भावना पायी जाती है वे किसी समस्या या परिस्थिति से हट जाना चाहते है। यह मनोदशा बच्चों के व्यक्तित्व के विकास में अड़चन सिद्ध होती है। शिक्षको को चाहिए कि नकारात्मक भावना के मूलभूत कारणों की खोज निकाले और वैसी परिस्थितियाँ उत्पन्न करें जो वास्तविकताओं तथा इनसे सम्बन्धित उत्तरदायित्वों को पहचानने की ओर बच्चों को उन्मुख कर सके।[5]

- **बच्चों के व्यक्तित्व विकास में विद्यालयः**

विद्यालय का कार्य बच्चे के व्यक्तित्व का समन्वित विकास करना है। बच्चे के ऊपर विद्यालय का बहुत ही गहरा प्रभाव पड़ता है। बच्चे अपना अधिकतर समय विद्यालय में ही व्यतीत करते है। अतः यह स्वाभाविक है कि बालक के व्यक्तित्व विकास में विद्यालय की प्रभाव पड़े है। जैसे

- मित्रता और संबंध जो बच्चों आपस में बनाते है, बच्चों के व्यक्तित्व को एक बड़ी सीमा तक प्रभावित करता है।
- विद्यालय तथा पाठयक्रम भी बच्चों के आदत संबंधी प्रत्युत्तरों पर प्रभाव डालते है। यदि बच्चे को लिखना–पढ़ना, चित्रांकन आदि न सीखें तो को व्यक्तित्व भिन्न हो जायेगा।
- बच्चों की रूचि, क्षमता, कौशल, संज्ञानात्मक विकास, परिपक्वता आदि को ध्यान में रखकर पाठ्यक्रम तथा विद्यालयीय योजना बनाई जाती है।

अतः बहुधा परीक्षा लेने का ढंग भी बच्चों के अन्दर ऐसी आदतें पैदा कर देता है कि जो बुरी होती है। बच्चों परीक्षा से डरते है और उनके अन्दर संवेगात्मक विचार उत्पन्न हो जाते हैं। इस ढंग से सुधार की अधिक आवश्यकता है।[6]

अतः शिक्षकों को इस बात की पूरी कोशिश करनी चाहिए कि बच्चों के शारीरिक, मानसिक, सांवेगिक शक्तियों का संतुलित विकास हो सके। शिक्षा की प्रचलित व्यवस्था में बालकों के व्यक्तित्व का विकास एकपक्षीय होता है, उनकी केवल मानसिक शक्तियाँ ही विकसित हो पाती है। अतः स्कूलों में व्यक्तित्व का निर्माण शिक्षण की प्रचलित रीतियों से नहीं हो सकता। इसके लिए स्कूल के संगठन को बदलना होगा और शिक्षण की सभी विधियों की व्यवहार करना होगा। स्कूल का संगठन समुदाय के रूप में किया जाय, बच्चों सामाजिक जीवन के रूप में अनुभव प्राप्त करे। सामुदायिक रहन–सहन की क्रियाओं से ही उनके व्यक्तित्व में सामाजिक संतुलन स्थापित हो सकेगा।[7]

स्कूल में सामाजिक जीवन के दोनों पक्षों का क्रियात्मक अनुभव छात्रों को होना चाहिए। ये अनुभव प्रतियोगात्मक तथा सहयोगी दोनों ही प्रकार के होने चाहिए। इन अनुभवों की प्राप्ति के लिए विद्यालय में ऐसे क्रियाशीलनों का आयोजन होना चाहिए जो बच्चों को समूह में एक–दुसरे के साथ मिल–जुलकर कार्य करने के अवसर दे सकें। बौद्धिक तथा शारीरिक कार्यों ,उद्योग, खेल आदि में से कुछ ऐसे क्रियाशीलन भी चुने जायें, जो छात्रों में स्वस्थ प्रतियोगिता कह भावना भर सकें।

अतः छात्रों को उत्तदायित्व निभाने के कार्य सौपें जाने चाहिए । इसके लिए वर्ग–पंचायत तथा स्कूल–पंचायत, छात्र संसद आदि का संगठन होना चाहिए। शिक्षक को बालकों के साथ सहानुभुति रखनी चाहिए और उनके साथ स्नेह का व्यवहार करना चाहिए। बालक को त्रुटियों के लिए डाँटने के कारण को समझने तथा उन्हे दूर करने के उपाय ढूँढ़ने चाहिए। सहानुभूति और स्नेह नहीं मिलने से बालक भयभीत रहा करते है और बड़े होने पर दब्बू तथा डरपोक बन जाते हैं।[8]

- **बच्चों के व्यक्तित्व विकास में शिक्षाः**

बच्चों के व्यक्तित्व विकास में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। व्यक्तित्व के विकास में विभेदीकरण तथा समन्वय की प्रक्रिया निहित है। शुरू में शिशु की माँग, प्रेरणाएँ तथा क्रियाएँ विभेदीकरण की ओर उन्मुख रहती है। इसके बाद समन्वय की प्रक्रियाएँ क्रियाशील होती हैं। व्यक्तित्व के विकास में एक तीसरी प्रक्रिया भी देखी जाती है जिसे स्तरीय गठन कहते हैं। व्यक्तित्व का विकास संगठित गुणों के विभिन्न स्तरों के क्रम में होता है। विभिन्न प्रकार के शैक्षिक वातारण का सृजन कर शिक्षक छात्रों के व्यक्तित्व को उपर्युक्त प्रक्रियाओं के द्वारा विकसित कर सकते हैं।[9]

अतः सीखना वातावरण पर आश्रित रहता है। शिक्षक बच्चों के अधि ागम को इस तरह प्रभावोत्पादक बनावें कि छात्र अपने पठन–पाठन, संमजन, अनुशासन आदि समस्याओं का निराकरण कर स्वस्थ व्यक्तित्व के निर्माण की ओर अग्रसर हो जायें। शिक्षा का सुत्रधार शिक्षक होता है। कक्षा रूपी समाज का वह नेता होता है। उसके

दृष्टिकोण उसके व्यवहार तथा उसके समस्त व्यक्तित्व पर बच्चों के व्यक्तित्व का विकास आश्रित रहता है। शिक्षाक्रम का भी प्रभाव छात्रों की व्यक्तित्व–निर्माण पर पड़ता है। शिक्षाक्रम लचीला होना चाहिए। उसमें वैकल्पिक विषयों की मात्रा अधिक होनी चाहिए तथा वे छात्रों का आवश्यकताओं पर आधारित हों ताकि बालकों की भिन्न–भिन्न योग्यताओं, रूचियों आदि के अनुसार रूपान्तरित हो सकें। शिक्षण–विधि भी छात्र–क्रियाशीलन पर आधारित होना चाहिए।

व्यक्तित्व का स्वरूप मूलतः अभियोजनात्मक है। अतः शिक्षा की व्यवस्था इस तरह करनी चाहिए कि बालको को अभियोजित होने के अवसर मिले। दुसरे शब्दों में विद्यालय का संगठन सजीव समुदाय के रूप में होना चाहिए। इससे समाज के भिन्न–भिन्न क्रिया कलापों में भाग लेते हुए बालक अपने व्यक्तित्व का विकास करेगा।[10]

- **बच्चों के व्यक्तित्व विकास की मापक की विधियाँः**

बच्चों के व्यक्तित्व को अनेक गुणों या लक्षणों का संगठन माना जाता है। व्यक्तित्व एक संश्लिष्ट है। वह सभी प्रकार के गुणों का समन्वित रूप है। उनके अन्तर्गत सभी प्रकार के विकासात्मक कार्यक्रम, मनोभाव, शारीरिक बनावट, चरित्र आदि आ जाते है। अतः इसकी जाँच के लिए अनेक विधियाँ निकाली गई हैं, यद्यपि इस सम्बन्ध में विशेष प्रगति नहीं हो पायी है। बच्चों के व्यक्तित्व के संबंध में मनोविज्ञान ने अभी पर्याप्त प्रगति नहीं की है और इसलिए व्यक्तित्व परीक्षण अभी तक अधिकांश रूप में जाँच की कसौटी पर है।

- **व्यक्तित्व मापन की विधियाँः**

जीवन इतिहास विधि का प्रयोग प्रचीन युनायी दार्शनिकों के समय से चला आ रहा है। आधुनिक काल में इस विधि को प्रमाणित करने, अपराधी बालकों और व्यक्तियों को समझाने के लिए प्रयोग किया जा रहा है। इस विधि में व्यक्ति का जैसा कि वह आज है, क्रमबद्ध अध्ययन किया जाता है।

निष्कर्षः

बच्चों के लिए व्यक्तित्व शब्द का प्रयोग उसके शारीरिक, मानसिक नैतिक और सामाजिक गुणों के सुसंगठित और गत्यात्मक संगठन के लिए किया जाता है जिसमें वह अन्य व्यक्तियों के साथ अपने सामाजिक जीवन में आदान–प्रदान व्यक्त करता है और बच्चे एक व्यक्तित्व के सम्पूर्ण व्यवहार प्रतिमान और इसकी विशेषताओं के योग का उल्लेख करता है। जिसमें बच्चों के चरित्र, चित्त–प्रकृति, ज्ञान–शक्ति तथा शरीर गठन का करीब–करीब एक स्थायी एवं टिकाऊ संगठन है जो वातावरण में उसके अपूर्ण समायोजन का निर्धारण करता है। व्यक्तित्व निर्धारण सम्बन्धी उपर्युक्त सभी परिभाषाएँ एक–दुसरे की विरोधी नहीं प्रत्युत् पूरक है। बच्चों अपने ढंग से व्यक्तित्व के निर्धारण में विचार प्रकट करते हैं जिसमें बच्चों के सभी गुणों का संतुलित संगठन है, जिसमें शारीरिक, मानसिक, सांवेगिक, सांवेगिक संज्ञानात्मक, बुद्धि, कल्पना, चिन्तन, आदत, चरित्र सामाजिक विकास आदि आ जाते है। कुछ बच्चे कक्षा में चुप्पी साधे रहते है। इस चुप्पी के पीछे मनोविज्ञानिक कारण होते है। विद्यालय का कार्य बालक के व्यक्तित्व का समन्वित विकास करना है। बालक के ऊपर विद्यालय का बहुत ही गहरा प्रभाव पड़ता है। बालक अपना अधिकतर समय विद्यालय में ही व्यतीत करते हैं। शिक्षकों को बालको के साथ सहानुभूति रखनी चाहिए और उनके साथ स्नेह का व्यवहार करना चाहिए। सहानुभूति और स्नेह नहीं मिलने से बालक भयभीत रहा करते है और वे बड़े होने पर दब्बु तथा डरपोक बन जाते हैं।

- **संदर्भ सूचीः**

1. सिंह, अरूण कुमार,ः शिक्षा मनोविज्ञान, भारती भवन, पटना, 2010 पृ० 466–469
2. चौबे, एस० पी० तथा चौवे० ऐ०ः शैक्षिक मनोविज्ञान के मूल आधार, इण्टरनेशनल पब्लिशिंग हाउस, मेरठ, 2007 पृ० 18
3. भटनागर, सुरेशः शिक्षा मनोविज्ञान, इण्टरनेशनल पब्लिशिंग हाउस मेरठ, 2007
4. श्रीवास्तव, ज्ञाननन्द प्रकाशः शिक्षा मनोविज्ञान कन्सैप्ट पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2002
5. शुक्ल, ओ० पी०ः शिक्षा मनोविज्ञान, भारत प्रकाशन, लखनऊ, 2002
6. चौहान, एस० एस०ः एडवान्सड एजुकेशनल साइक्लोजी, विकास, पब्लिशिंग हाउस प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, 2000
7. वही पृ० 221
8. गुप्ता, एस० पी०ः उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, शारदा, पुस्तक भवन, इलाहाबाद, 2011
9. सिंह, अरूण कुमारः उच्चतर सामान्य मनोविज्ञान, मोतीलाल बनारसीदास हाउस प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, 2000
10. मंगल, एस० के०ः एडभान्स एजुकेशनल साइक्लोजी पी० एच० आई० लंर्निग प्राईवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, 2009